

## 2

## एआई से कला क्षेत्र का बदलता परिदृश्य: साहित्यिक चोरी में एआई की भूमिका

**Prof. Vandana Kalla\***

Dean, Faculty of Fine Arts &amp; Former Head of Music Department, University of Rajasthan, Jaipur.

\*Corresponding Author: 11vandana.kalla11@gmail.com

**सार**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence—AI) ने कला एवं साहित्य के क्षेत्र में रचनात्मकता, अभिव्यक्ति और सृजन की पारंपरिक प्रक्रियाओं को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। AI आधारित उपकरणों के माध्यम से चित्रकला, संगीत, कविता, कहानी, लेखन तथा अन्य रचनात्मक सामग्री का निर्माण अपेक्षाकृत सरल और तीव्र हो गया है। इसके परिणामस्वरूप कलाकारों एवं लेखकों के लिए नए अवसर उत्पन्न हुए हैं, वहीं मौलिकता, लेखकीय अधिकार, कॉपीराइट और साहित्यिक चोरी से संबंधित अनेक गंभीर प्रश्न भी सामने आए हैं। AI द्वारा उपलब्ध सामग्री को बिना उचित संदर्भ, स्वीकृति या मौलिक योगदान के अपने नाम से प्रस्तुत करना साहित्यिक चोरी के नए रूपों को जन्म दे सकता है। साथ ही, AI-generated सामग्री और पूर्व उपलब्ध सामग्री के बीच अंतर करना तथा उसके वास्तविक स्रोत की पहचान करना भी चुनौतीपूर्ण है। यह अध्याय कला क्षेत्र में AI के बढ़ते प्रभाव, रचनात्मकता में आए परिवर्तनों तथा साहित्यिक चोरी में AI की भूमिका का विश्लेषण करता है। इसमें AI के नैतिक एवं कॉपीराइट संबंधी पहलुओं, साहित्यिक चोरी की पहचान और रोकथाम के उपायों तथा मानव रचनात्मकता और AI के बीच संतुलन की आवश्यकता पर भी चर्चा की गई है।

**शब्दकोश**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कला, साहित्य, साहित्यिक चोरी, रचनात्मकता, कॉपीराइट, मौलिकता, बौद्धिक संपदा।

**प्रस्तावना**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence—AI) वर्तमान समय की सबसे प्रभावशाली तकनीकी प्रगतियों में से एक है। AI ने केवल विज्ञान, व्यवसाय और शिक्षा को ही प्रभावित नहीं किया है, बल्कि कला, साहित्य, संगीत, चित्रकला और अन्य रचनात्मक क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। पहले रचनात्मक कार्य मुख्यतः मानव की कल्पना, अनुभव, संवेदना और कौशल पर निर्भर माने जाते थे, लेकिन आज AI आधारित उपकरणों की सहायता से कविता, कहानी, चित्र, संगीत, डिजाइन तथा अन्य रचनात्मक सामग्री का निर्माण किया जा सकता है।

Generative AI ने इस परिवर्तन को और अधिक व्यापक बनाया है। उपयोगकर्ता कुछ निर्देश देकर अपेक्षाकृत कम समय में विभिन्न प्रकार की सामग्री तैयार कर सकते हैं। इससे कलाकारों, लेखकों, विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और रचनाकारों के लिए नए अवसर उपलब्ध हुए हैं। AI विचारों को विकसित करने, भाषा सुधारने, सामग्री को व्यवस्थित करने और रचनात्मक प्रयोग करने में सहायक हो सकता है।

हालाँकि, AI के बढ़ते प्रयोग के साथ साहित्यिक चोरी (Plagiarism) और मौलिकता से जुड़े प्रश्न भी अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। साहित्यिक चोरी का सामान्य अर्थ किसी अन्य व्यक्ति के विचार, शब्द, रचना या बौद्धिक योगदान को उचित श्रेय दिए बिना अपने नाम से प्रस्तुत करना है। AI के संदर्भ में समस्या अधिक जटिल हो सकती है, क्योंकि AI द्वारा तैयार सामग्री कई पूर्व उपलब्ध स्रोतों और प्रशिक्षण सामग्री से प्रभावित हो सकती है।

इसलिए यह आवश्यक है कि AI को केवल रचनात्मक उत्पादन के साधन के रूप में न देखकर उसके नैतिक, कानूनी और शैक्षणिक प्रभावों को भी समझा जाए। इस अध्याय का उद्देश्य कला एवं साहित्य में AI के बढ़ते प्रभाव तथा साहित्यिक चोरी से संबंधित इसके विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करना है।

### कला एवं साहित्य के क्षेत्र में एआई का प्रवेश

कला और साहित्य मानव सभ्यता की अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण माध्यम रहे हैं। चित्रकला, संगीत, कविता, कहानी, नाटक और साहित्यिक लेखन में मानव अनुभव एवं कल्पना की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। डिजिटल तकनीक के विकास के साथ इन क्षेत्रों में कंप्यूटर आधारित उपकरणों का प्रयोग बढ़ा और अब AI ने रचनात्मक प्रक्रिया को एक नया आयाम प्रदान किया है।

AI आधारित तकनीकें बड़ी मात्रा में उपलब्ध डेटा से पैटर्न सीखकर नई सामग्री उत्पन्न कर सकती हैं। लमदमतंजपअम AI विशेष रूप से ऐसी सामग्री तैयार करने में सक्षम है जो पारंपरिक मानव-निर्मित सामग्री के समान दिखाई दे सकती है। उदाहरण के लिए, टेक्स्ट आधारित AI कहानी, कविता, लेख या संवाद तैयार कर सकता है, जबकि image&generation systems निर्देश के आधार पर चित्र या कलात्मक डिजाइन बना सकते हैं। इसी प्रकार संगीत से संबंधित AI उपकरण धुन, संगीत संरचना और अन्य ऑडियो सामग्री के निर्माण में सहायता कर सकते हैं।

साहित्य के क्षेत्र में AI का प्रयोग लेखन, संपादन, अनुवाद, सारांश निर्माण और विचार-विकास में किया जा रहा है। लेखक AI की सहायता से किसी विषय पर प्रारंभिक विचार प्राप्त कर सकते हैं, भाषा संबंधी त्रुटियों को सुधार सकते हैं और विभिन्न लेखन शैलियों का प्रयोग कर सकते हैं।

कला के क्षेत्र में AI कलाकारों को नई तकनीकों और शैलियों के साथ प्रयोग करने का अवसर देता है। डिजिटल चित्रण, ग्राफिक डिजाइन और दृश्य प्रभावों के निर्माण में AI आधारित प्रणालियाँ समय और श्रम को कम कर सकती हैं। इससे ऐसे लोग भी रचनात्मक गतिविधियों में भाग ले सकते हैं जिनके पास पारंपरिक कलात्मक प्रशिक्षण सीमित है।

फिर भी AI की भूमिका को मानव कलाकार या लेखक के पूर्ण विकल्प के रूप में देखना उचित नहीं है। मानवीय अनुभव, सामाजिक संदर्भ, भावनाएँ, सांस्कृतिक समझ और

व्यक्तिगत दृष्टिकोण रचनात्मकता के महत्वपूर्ण तत्व हैं। इसलिए वर्तमान परिदृश्य में AI को मानव रचनात्मकता के सहयोगी उपकरण के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

### एआई द्वारा कला एवं साहित्य में आए परिवर्तन

AI ने कला एवं साहित्य की रचनात्मक प्रक्रिया को कई स्तरों पर प्रभावित किया है। सबसे प्रमुख परिवर्तन रचना की गति और उपलब्धता में दिखाई देता है। पहले किसी चित्र, डिजाइन या साहित्यिक सामग्री को तैयार करने में काफी समय और तकनीकी कौशल की आवश्यकता होती थी। AI आधारित उपकरणों के कारण प्रारंभिक सामग्री कुछ ही समय में तैयार की जा सकती है।

साहित्यिक क्षेत्र में AI का उपयोग विचार निर्माण, विषय-विस्तार, भाषा सुधार, अनुवाद और संपादन के लिए किया जा रहा है। लेखक किसी विषय के विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने तथा प्रारंभिक रूपरेखा बनाने में AI की सहायता ले सकते हैं। इससे लेखन प्रक्रिया अधिक सुविधाजनक हो सकती है।

चित्रकला एवं डिजिटल कला में भी AI ने नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। केवल लिखित निर्देश के आधार पर विभिन्न प्रकार के दृश्य तैयार किए जा सकते हैं। इससे कलाकार पारंपरिक तकनीकों के साथ डिजिटल तकनीकों का संयोजन कर नई अभिव्यक्ति विकसित कर सकते हैं। संगीत में भी AI धुनों, वाद्य संयोजन और अन्य रचनात्मक प्रयोगों में सहायता कर सकता है।

AI ने कला के लोकतंत्रीकरण में भी योगदान दिया है। महंगे उपकरणों या लंबे तकनीकी प्रशिक्षण के अभाव में भी व्यक्ति डिजिटल माध्यम से रचनात्मक प्रयोग कर सकता है। इससे रचनात्मकता का दायरा व्यापक हुआ है।

इसके साथ कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। AI द्वारा निर्मित सामग्री में मौलिकता की अवधारणा जटिल हो जाती है। यह प्रश्न उठता है कि किसी AI-generated रचना का वास्तविक लेखक कौन है— AI प्रणाली, उसका उपयोग करने वाला व्यक्ति अथवा उन मानव रचनाकारों की सामूहिक रचनाएँ जिनसे AI ने प्रशिक्षण के दौरान पैटर्न सीखे हैं। इसी प्रकार कलाकारों और लेखकों की अनुमति के बिना उनकी रचनाओं के तकनीकी उपयोग को लेकर कॉपीराइट और नैतिक प्रश्न भी उठते हैं।

इस प्रकार AI ने कला एवं साहित्य को अधिक तकनीकी, तेज और प्रयोगात्मक बनाया है, लेकिन साथ ही मौलिकता, लेखकीय अधिकार और जिम्मेदार उपयोग की आवश्यकता को भी बढ़ाया है।

### साहित्यिक चोरी की अवधारणा एवं बदलता स्वरूप

साहित्यिक चोरी (Plagiarism) का अर्थ किसी अन्य व्यक्ति के विचार, शब्द, शोध, रचनात्मक अभिव्यक्ति या बौद्धिक योगदान को उचित श्रेय दिए बिना अपने कार्य के रूप में प्रस्तुत करना है। अकादमिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में इसे गंभीर नैतिक समस्या माना जाता है। साहित्यिक चोरी केवल शब्दों की नकल तक सीमित नहीं है; किसी विचार, संरचना, तर्क या रचनात्मक अभिव्यक्ति का अनुचित उपयोग भी इसके अंतर्गत आ सकता है।

साहित्यिक चोरी के पारंपरिक रूपों में किसी पुस्तक, लेख या शोध-पत्र से शब्दशः सामग्री लेकर उसे बिना संदर्भ के प्रस्तुत करना, दूसरे लेखक के विचारों को अपने नाम से

प्रस्तुत करना तथा स्रोत को छिपाना शामिल हैं। डिजिटल तकनीक के विकास ने इस प्रक्रिया को अधिक आसान बना दिया है क्योंकि इंटरनेट पर विशाल मात्रा में सामग्री उपलब्ध है।

AI के आगमन ने साहित्यिक चोरी के स्वरूप को और अधिक जटिल बना दिया है। AI किसी उपलब्ध सामग्री को पुनर्गठित, संक्षिप्त या पुनर्लिखित रूप में प्रस्तुत कर सकता है। परिणामस्वरूप केवल शब्दों का मिलान करने वाले पारंपरिक plagiarism detection systems के लिए ऐसी सामग्री की पहचान कठिन हो सकती है।

AI—सहायित साहित्यिक चोरी का एक रूप तब सामने आता है जब कोई व्यक्ति AI से प्राप्त सामग्री को बिना सत्यापन या उचित स्वीकार्यता के अपनी मौलिक रचना के रूप में प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से शैक्षणिक लेखन में यह समस्या महत्वपूर्ण है, क्योंकि किसी विद्यार्थी या शोधकर्ता द्वारा AI-generated सामग्री को स्वयं के स्वतंत्र बौद्धिक कार्य के रूप में प्रस्तुत करना लेखकीय पारदर्शिता से जुड़ा प्रश्न बन सकता है।

यहाँ AI के उपयोग और साहित्यिक चोरी के बीच अंतर करना भी आवश्यक है। AI का प्रत्येक उपयोग plagiarism नहीं है। यदि लेखक AI का उपयोग भाषा सुधारने, विचार व्यवस्थित करने या प्रारंभिक सहायता प्राप्त करने के लिए करता है और आवश्यकतानुसार उसका उचित उल्लेख करता है, तो स्थिति अलग होती है। समस्या मुख्यतः तब उत्पन्न होती है जब किसी अन्य स्रोत या AI-generated सामग्री को बिना उचित श्रेय के मौलिक कार्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

### साहित्यिक चोरी में एआई की भूमिका

AI ने साहित्यिक चोरी की समस्या को समाप्त नहीं किया है, बल्कि इसके कुछ पुराने रूपों को बदलकर नए प्रश्न उत्पन्न किए हैं। ळमदमतंजपअम AI की सहायता से किसी विषय पर बड़ी मात्रा में सामग्री तैयार की जा सकती है। यदि उपयोगकर्ता इस सामग्री को बिना जाँच, स्रोत—सत्यापन या उचित प्रकटीकरण के अपने नाम से प्रस्तुत करता है, तो मौलिकता और शैक्षणिक ईमानदारी पर प्रश्न उठ सकते हैं।

AI द्वारा तैयार सामग्री की एक प्रमुख विशेषता उसका पुनर्लेखन और पुनर्संयोजन है। कोई उपयोगकर्ता किसी मौजूदा विचार या सामग्री को AI की सहायता से अलग भाषा में प्रस्तुत कर सकता है। केवल शब्दों की समानता पर आधारित plagiarism detection ऐसे मामलों को हमेशा प्रभावी ढंग से पहचान पाए, यह आवश्यक नहीं है। इसलिए साहित्यिक चोरी की पहचान अब केवल text matching तक सीमित नहीं रह सकती।

दूसरी चुनौती AI-generated सामग्री के स्रोत से संबंधित है। AI किसी उत्तर में ऐसे तथ्य, उदाहरण या संदर्भ प्रस्तुत कर सकता है जिनका वास्तविक स्रोत स्पष्ट न हो। कभी—कभी AI गलत या काल्पनिक संदर्भ भी उत्पन्न कर सकता है। इसलिए AI से प्राप्त सामग्री को अंतिम रूप देने से पहले स्रोतों की स्वतंत्र जाँच आवश्यक है।

शैक्षणिक लेखन में AI की भूमिका विशेष रूप से संवेदनशील है। विद्यार्थी या शोधकर्ता यदि AI से पूरा उत्तर, शोध—पत्र या असाइनमेंट तैयार करवाकर उसे अपने स्वतंत्र कार्य के रूप में जमा करता है, तो यह लेखकीय पारदर्शिता और अकादमिक ईमानदारी से संबंधित प्रश्न उत्पन्न करता है। दूसरी ओर, AI का उपयोग भाषा—संपादन, brainstorming

या प्रारंभिक संरचना तैयार करने जैसे सहायक कार्यों के लिए किया जा सकता है, बशर्ते संबंधित संस्था की नीतियों और आवश्यक disclosure का पालन किया जाए।

कला के क्षेत्र में भी समान प्रश्न दिखाई देते हैं। यदि AI द्वारा किसी कलाकार की शैली से अत्यधिक मिलती-जुलती सामग्री तैयार की जाती है, तो मौलिकता और कलाकार के अधिकारों से जुड़े प्रश्न उठ सकते हैं। यहाँ बवचलतपहीज, 'नजीवतीपच और मजीपबंस नेम के बीच संतुलन आवश्यक है।

अतः AI के संदर्भ में साहित्यिक चोरी से निपटने के लिए केवल detection software पर्याप्त नहीं है। स्रोतों का सत्यापन, उचित citation, AI के उपयोग में पारदर्शिता, मानव संपादन, मौलिक योगदान और संस्थागत दिशानिर्देशों का पालन अधिक व्यापक समाधान का हिस्सा हैं। AI को रचनात्मक सहयोगी के रूप में उपयोग करते हुए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि अंतिम रचना में लेखक का वास्तविक बौद्धिक एवं रचनात्मक योगदान स्पष्ट रहे।

### एआई, कॉपीराइट और नैतिक चुनौतियाँ

कला एवं साहित्य में AI के बढ़ते उपयोग ने कॉपीराइट और नैतिकता से जुड़े अनेक नए प्रश्न उत्पन्न किए हैं। पारंपरिक रूप से किसी साहित्यिक या कलात्मक रचना का कॉपीराइट उसके मानव रचनाकार से जुड़ा होता है। लेकिन जब किसी रचना के निर्माण में AI की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, तब लेखकत्व और अधिकारों की प्रकृति अधिक जटिल हो जाती है।

AI-generated content के संदर्भ में यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि अंतिम रचना में मानव का कितना रचनात्मक योगदान है। यदि व्यक्ति केवल एक सामान्य निर्देश देकर AI से पूरी रचना तैयार करवाता है, तो उसकी भूमिका पारंपरिक लेखक से अलग हो सकती है। इसके विपरीत, यदि कलाकार AI को केवल एक उपकरण के रूप में प्रयोग करके स्वयं चयन, संपादन, पुनर्संरचना और रचनात्मक परिवर्तन करता है, तो मानव योगदान अधिक स्पष्ट होता है।

एक अन्य महत्वपूर्ण विषय AI systems के training data से संबंधित है। AI models के प्रशिक्षण में बड़ी मात्रा में उपलब्ध डिजिटल सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। इसमें साहित्यिक रचनाएँ, चित्र, संगीत और अन्य रचनात्मक सामग्री शामिल हो सकती हैं। इससे कलाकारों और लेखकों के अधिकार, अनुमति तथा उचित प्रतिफल से संबंधित प्रश्न उत्पन्न होते हैं।

नैतिक दृष्टि से AI का उपयोग पारदर्शी होना आवश्यक है। किसी रचना में AI की महत्वपूर्ण भूमिका होने पर, जहाँ संस्थागत या प्रकाशन संबंधी नियम अपेक्षा करें, वहाँ AI के उपयोग का उचित प्रकटीकरण किया जाना चाहिए। इसी प्रकार किसी अन्य लेखक की सामग्री को AI के माध्यम से बदलकर प्रस्तुत करने से पहले उसके स्रोत और अधिकारों का ध्यान रखना आवश्यक है।

इस प्रकार AI, कॉपीराइट और नैतिकता का संबंध केवल कानूनी अधिकारों तक सीमित नहीं है। इसमें मौलिकता, लेखकीय पहचान, अनुमति, श्रेय, पारदर्शिता और रचनात्मक उत्तरदायित्व भी शामिल हैं।

## एआई—आधारित साहित्यिक चोरी की पहचान एवं रोकथाम

AI के माध्यम से उत्पन्न या पुनर्लिखित सामग्री की पहचान साहित्यिक चोरी की रोकथाम का महत्वपूर्ण पक्ष बन गई है। पारंपरिक plagiarism detection systems मुख्यतः विभिन्न दस्तावेजों में शब्दों या वाक्यांशों की समानता खोजते हैं। लेकिन AI-generated सामग्री में भाषा को अलग ढंग से पुनर्गठित किया जा सकता है, जिससे केवल शब्द-समानता के आधार पर पहचान करना कठिन हो सकता है।

इसलिए साहित्यिक चोरी की पहचान के लिए तकनीकी उपकरणों के साथ-साथ मानवीय मूल्यांकन भी आवश्यक है। किसी विद्यार्थी या लेखक के पूर्व लेखन, संदर्भों की गुणवत्ता, तर्क की निरंतरता तथा प्रस्तुत सामग्री की प्रामाणिकता की जांच की जा सकती है। AI-detection tools को भी अंतिम और निर्णायक प्रमाण के रूप में उपयोग करने के बजाय सहायक साधन के रूप में देखना अधिक उपयुक्त है, क्योंकि AI-generated content की पहचान करने वाली तकनीकों में भी सीमाएँ हो सकती हैं।

साहित्यिक चोरी रोकने का सबसे प्रभावी तरीका रचनाकारों और विद्यार्थियों में अकादमिक एवं रचनात्मक ईमानदारी की भावना विकसित करना है। प्रत्येक बाहरी विचार, उद्धरण, आँकड़े और सामग्री के लिए उचित citation एवं reference दिया जाना चाहिए। AI की सहायता से प्राप्त सामग्री को भी तथ्यात्मक रूप से सत्यापित करना आवश्यक है।

शैक्षणिक संस्थानों को AI के उपयोग के संबंध में स्पष्ट दिशानिर्देश विकसित करने चाहिए। इन दिशानिर्देशों में यह स्पष्ट किया जा सकता है कि AI का उपयोग किन कार्यों के लिए स्वीकार्य है, कहाँ disclosure आवश्यक है तथा किन परिस्थितियों में AI-generated सामग्री को स्वतंत्र कार्य के रूप में प्रस्तुत करना अनुचित माना जाएगा।

इस प्रकार technology + human review + proper citation + जतंदेचंतमदज AI नेम साहित्यिक चोरी की रोकथाम के महत्वपूर्ण आधार हैं।

## भविष्य की संभावनाएँ

आने वाले समय में AI का कला और साहित्य के क्षेत्र में उपयोग और अधिक व्यापक होने की संभावना है। AI कलाकारों एवं लेखकों को नए प्रयोग करने, विभिन्न शैलियों को समझने तथा रचनात्मक प्रक्रिया को अधिक सुविधाजनक बनाने में सहायता कर सकता है।

भविष्य में मानव और AI के सहयोग से ऐसी रचनाएँ विकसित हो सकती हैं जिनमें तकनीकी क्षमता और मानवीय अनुभव दोनों का समन्वय हो। इसके साथ मौलिकता, लेखकत्व और कॉपीराइट की अवधारणाओं को नए तकनीकी संदर्भों में समझने की आवश्यकता होगी।

कला एवं साहित्य के भविष्य में मुख्य चुनौती AI को रोकना नहीं, बल्कि उसका जिम्मेदार, पारदर्शी और नैतिक उपयोग सुनिश्चित करना होगी। रचनाकारों को AI की क्षमताओं के साथ-साथ उसकी सीमाओं को भी समझना आवश्यक होगा।

## निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने कला एवं साहित्य की पारंपरिक रचनात्मक प्रक्रियाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। AI के माध्यम से लेखन, चित्रकला, संगीत और डिजिटल कला में नए प्रयोग संभव हुए हैं तथा रचनात्मक कार्य अधिक सुलभ और तीव्र हुए हैं। इसके

साथ साहित्यिक चोरी, मौलिकता, लेखकत्व, कॉपीराइट और नैतिकता से जुड़े नए प्रश्न भी सामने आए हैं।

AI स्वयं साहित्यिक चोरी का पर्याय नहीं है; समस्या उसके अनुचित उपयोग से उत्पन्न हो सकती है। AI-generated या AI-assisted सामग्री को बिना उचित सत्यापन, श्रेय अथवा आवश्यक disclosure के प्रस्तुत करना रचनात्मक एवं शैक्षणिक ईमानदारी के लिए चुनौती बन सकता है।

इसलिए भविष्य में AI और मानव रचनात्मकता के बीच संतुलित संबंध आवश्यक होगा। मानवीय मौलिकता, आलोचनात्मक सोच, उचित संदर्भ, कॉपीराइट का सम्मान और पारदर्शी AI उपयोग कला एवं साहित्य के जिम्मेदार विकास के प्रमुख आधार होंगे।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Committee on Publication Ethics. (2024). *Authorship and AI tools*. COPE.
2. Miao, F., & Holmes, W. (2023). *Guidance for generative AI in education and research*. UNESCO.
3. World Intellectual Property Organization. (2024). *Generative AI: Navigating intellectual property*. WIPO.
4. World Intellectual Property Organization. (2024). *Generative AI: WIPO conversation on intellectual property and frontier technologies*. WIPO.
5. U.S. Copyright Office. (2025). *Copyright and artificial intelligence: Part 2—Copyrightability*. U.S. Copyright Office.
6. World Intellectual Property Organization. (2024). *WIPO conversation—Generative AI and intellectual property*. WIPO.
7. U.S. Copyright Office. (2025). *Identifying the economic implications of artificial intelligence for copyright policy*. U.S. Copyright Office.
8. UNESCO. (2023). *Guidance for generative AI in education and research: Towards a human-centred approach to the use of generative AI*. UNESCO.

